मर्यादाओं का सम्यक् पालन करने वाला ही पूज्य होता है : आचार्य महाश्रमण

रतनगढ़ : 18 जनवरी 2011

राश्ट्रसंत आचार्य महाश्रमण ने कहा कि सबमें हर पल चेतना का जागरण रहे। मर्यादाओं का सम्यक् पालन करने वाला ही पूज्य होता है। जीवन में भारीरिक, वाचिक, मानसिक व भावनात्मक अहिंसा का पालन हो। वे गोलछा ज्ञान मंदिर में वि ाल धर्मसंघ को ''ध्यान चेतना के जागरण'' के संदर्भ में व्याख्यान दे रहे थे।

उन्होंने कहा कि आज चतुर्द ी है, इस तिथि को धर्म तिथि की प्रतिश्ठा प्राप्त है। इस तिथि पर हाजरी साधुओं के आचार का एक विधान है। समिति, गुप्ति व महाव्रतों के 13 नियमों का पालन करने वाला ही सच्चा साधु है। उन्होंने तेरापंथ परम्परा के अनुसार आचार्यश्री भिक्षु की मर्यादाओं को विस्तार से बताते हुए कहा कि एक आचार व एक विचार व एक प्ररूपणा इसकी खास वि ेशता है। तेरापंथ भाब्द की मिमांसा करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा कि ''हे प्रभो यह तेरापंथ'' का अर्थ है कि यह प्रभु का ही पंथ है, हम तो उस पथ के पथिक है। संयम धर्म है–वहीं असयंम अधर्म है, त्याग धर्म है–वहीं भोग अधर्म है, व्रत धर्म है–वहीं अव्रत अधर्म है। तेरापंथ के पांच सूत्र अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रãचर्य व अपरिग्रह बताते हुए इन पांच महाव्रतों की चेतना से चलना, विवेक पूर्ण बोलना, भाुद्ध आहार दाता की स्वेच्छा से लेना, पदार्थों को उठाते व रखते समय भूमि का प्रतिलेखन करना व परिश्ठापन हेतु निर्जीव भूमि का उपयोग करना, मन, वाणी व भारीर का सयंम करना ही तेरापंथ के साधु–साध्वियों की मुख्य मर्यादाएं है। मौलिक मर्यादाओं की जानकारी देते हुए कहा कि तेरापंथ में मुख्य नेतृत्व एक आचार्य का है व आचार्य की आज्ञा से ही चातुर्मास व विहार करना होता है। आचार्यों की कभी कड़ी डांट भी सहनी पड़े तो संघ के प्रति अनास्था का भाव नहीं आना चाहिए। उन्होंने पूर्व आचार्यों के संघ मर्यादा पत्र का वाचन भी किया।

आचार्य महाश्रमण ने पूर्वांचल यात्रा का संकेत देते हुए संघ के सामने प्रस्ताव रखा कि मुझे लम्बी यात्रा करनी चाहिए या क्या करना चाहिए, पूरा संघ उक्त विशय में मुझे दो सप्ताह में अपनी राय दे। गोलछा ज्ञान मंदिर के प्रांगण में वर्धमान महोत्सव के बाद बड़ी हाजरी का कार्यक्रम रखा गया जिसमें लगभग 400 साधु–साध्वियों व समण–समणियों ने पंक्तिबद्ध खड़े होकर अपने आचार्य के समक्ष अपने संकल्पों को फिर से दोहराया। प्रांगण ऊ अर्हम् की ध्वनि से गूंज उठा। प्रवचन में सबसे पहले दिवंगत साध्वीश्री पूना जी (सुजानगढ़) का बीदासर में, साध्वीश्री मानकुमारी जी (राजलदेसर) का बीकानेर में, साध्वीश्री बिदामां जी (खिंवाड़ा) का गंगा ाहर में हुए स्वर्गाराहण की स्मृति में एक लोग्गस के ध्यान से भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम में साध्वीश्री जिनप्रभा ने अपनी पुस्तिका ''21 द्वार'' आचार्यश्री महाश्रमण को भेंट की।

दिनांक : 19 जनवरी 2011 का प्रवचन ''अहिंसक चेतना का जागरण'' के संदर्भ में जैन दादाबाड़ी के प्रांगण में होगा। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

रणजीत दूगड़
संयोजक मीडिया समिति
+91 9831017467
rs_dugar@yahoo.com